‘इक्कीसवी सदी के उपन्यासों में बदलते मूल्यों का प्रतिबिंब।’

(पंचकन्या, सहेला रे, चलती चाकी, शाम की झिलमिल, जानकीदास तेजपाल मैंशन उपन्यासों के विशेष संदर्भ में)

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

पी.एच.डी. उपाधि (हिंदी) हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा

शोधकर्ता

प्रा. सौ. सुपर्णा गंगाधर संसुध्दी

जयसिंगपूर कॉलेज जयसिंगपूर

शोधनिर्देशक

डॉ. मुकुंद कवडे

सहायक प्राध्यापक

(हिंदी विभाग)

पीपल्स महाविद्यालय, नांदेड

२०१८

शोधकार्य का विषय

'इक्कीसवी सदी के उपन्यासों में बदलते मूल्यों का प्रतिबिंब।'

विषय चयन

इक्कीसवी सदी का चित्रण करनेवाली अनूदित साहित्य कृतियाँ - बुकर पारितोषिक प्राप्त 'द गॉड ऑफ स्मॉल थिंग्ज ', रेडमॅपल रीडिंग ॲवार्ड प्राप्त 'द ब्रेडविनर' इसके ही अन्य हिस्से - 'परवाना' 'शौजिया' यह किताबें मैंने पढी। उसके पश्चात हिंदी उपन्यास - सुरेंद्र वर्माजी का मुझे 'चाँद चाहिए' मैत्रेयी पुष्पा का 'विजन' ममता कालिया का 'दौड' जैसे उपन्यास पढे। इन उपन्यासों में व्यक्त आतंक, शोषण, युध्द की त्रासदी, भ्रष्टाचार आदि समस्या तथा भारतीय परिवेश में पूरी तरह से नई संकल्पनाओं को देखकर मुझे अन्य उपन्यास पढने की रूचि उत्पन्न हुई। इसी दौरान मैंने हिंदी के अन्य उपन्यास भी पढे जिसमें कमलकुमार का 'पासवर्ड', मनोज सिंह का 'हॉस्टल के पन्नों से' कुसुम अंसल का 'तापसी' उदयप्रकाश का 'पीली छतरीवाली लडकी' उषा प्रियवंदा 'अंतर्वंशी' उल्लेखनीय है। इन उपन्यासों में भारतीय परिवेश की बदलती तस्वीर पूरी तरह बडी बेबाकी से चित्रित हुई है। इन्हीं उपन्यासों में बदलते मूल्यों के कारण मानवी जीवन की मानवीय जटिलता एवं उलझनों का चित्रण दिखाई देता है जिससे उपन्यासकारों ने इस बदलते परिवेश के साथ ही भारतीय मूल्यों को भी बरकरार रखा है या नहीं, मानवीयता को बचाने के लिए भारतीय जीवन मूल्य, परंपरा ही हमेशा रहेगी इस दृष्टि से मैंने प्रस्तुत विषय का चुनाव किया है।

भौतिकता की चकाचौंध, पूँजीवाद, बाजारवाद आदि स्थितियों से समकालीन मनुष्य को उच्च आकांक्षाओं के कारण गतिशील दौड में जबरदस्ती से जुडना पड रहा है। मनुष्य की गति सही दिशा में बढने के लिए उसे परंपरागत मूल्यों के साथ नए मूल्य भी अपनाने पडते है। तभी उसके जीवन को सही आकार, सफलता प्राप्त हो पाएगी। इक्कीसवी सदी के उपन्यासकारोंने आज के जीवन की विसंगति, विडंबनाओं को विवरणात्मक रुप में उपन्यासों में अभिव्यक्त किया है। अन्य उपन्यासों में भी इसतरह का चित्रण कैसे प्रतिबिंबित हुआ है, उसे पढने की इच्छा में मैंने प्रस्तुत विषय का चुनाव किया है। भारतीय मूल्य जैसे 'जीयो और जीने दो' इस तत्व को मानता है। परंतु इक्कीसवी

सदी की बदलती प्रवृत्ति में हमारे यह मूल्य पीछड रहे हैं। परिवेशगत, विकृति पनपने लगी है। इक्कीसवी सदी के उपन्यासों में इनका चित्रण उपन्यासकारों ने नए ढंग एवं विषय की नवीनता के साथ किया है जिसे पढने के पश्चात मानवता को बचाए रखने की दृष्टि से एक दिशा प्रस्तुत साहित्यकारों द्वारा दी गई है या नहीं? इसे जानने की उत्सुकता में मैंने इस विषय को चुना है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन -

इस विषय की दृष्टि से इसके पहले 'श्रीराम परिहार के निबंधों में सांस्कृतिक मूल्य' (पवनकुमार) 'अज्ञेय के साहित्य में जीवनमूल्य' इसपर १९९० में शामस्वरूप शर्माजी ने कार्य किया है। 'कथाकार 'निशंक' के उपन्यासों में जीवनमूल्य' डॉ. योगेंद्रनाथ शर्मा ने इस विषय पर शोधकार्य किया है। परंतु 'इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में प्रतिबिंबित मूल्य' इस विषयपर शोधकार्य नहीं हुआ है। इसलिए मैंने प्रस्तुत विषय का चुनाव किया है।

शोधकार्य का उद्देश्य

इक्कीसवी सदी में उपभोक्तावादी संस्कृति में जन्मा बाजारू मूल्य सर्वशक्तिमान बनता जा रहा है। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक संदर्भों में मूल्यहीनता का शिकार हम बनते जा रहे है। विश्वव्यापार की संकल्पना ने सारे विश्व को विक्रेता और ग्राहक इन दो वर्गों में बाँट दिया है। ऐसे समय बदलते परिवेश में उपभोक्ता संस्कृति पनप रही है। परिणाम स्वरूप मानवीय संबंधों में दरारे आ रही है। इन सबका चित्रण इक्कीसवी सदी के उपन्यासों में हो रहा है।

इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में प्रतिबिंबत बदलते मूल्यों को विश्लेषित करना तथा उपन्यासों में अभिव्यक्त इक्कीसवीं सदी की स्थिति का सटिक वर्णन करता और दृष्टिगोचर होनेवाली समस्याओं को उद्घटित करना तथा समाधान ढूँढना ये उद्देश्य रहेगा। बाजारीकरण, औद्योगिकीकरण से मानवीय संस्कृति एक ग्लोबल व्हिलेज बनती

जा रही है। मनुष्य एक दूसरे के बहुत निकट पहुंच रहा है परंतु इससे भारतीय परिवेश में इस नयी भावभूमि से एक नयी संस्कृति पनप रही है। इंटरनेट, मोबाईल जैसी सुविधासे आय टी हॅव? और आय टी नॉट जैसे कारणों से उत्पन्न जटिलता से आम आदमी बिखेरता जा रहा है उसकी इस स्थिति का मानसिक विश्लेषण भी इस शोधकार्य के अध्ययन की नई दिशा प्रदान कर सकता है।

शोधकार्य की पद्धतियाँ

प्रस्तुत शोधकार्य विश्लेषणात्मक पद्धति के किया जाएगा। शोध विषय की दृष्टि से इक्कीसवी सदी के उपन्यासों में विविधता है फिर भी यहाँ मैंने कुछ ही उपन्यासों को चुना है जिससे इन उपन्यासों के द्वारा अन्य उपन्यासों को समझा परखा जाएगा। भारतीय परिवेशगत बदलते मूल्यों को प्रस्तुत शोधकार्य में परखा जाएगा।

सामाजिक विकास में शोध सहायक होते हैं और जिज्ञासा की मूलप्रवृत्ति का निराकरण करते है इसलिए हिंदी के विद्वानों के साथ परिचर्चा के द्वारा विचारधारा को विकसित करने का प्रयास करूँगी (Developing the ideas through Discussion) संबंधित साहित्य के सर्व्हेक्षण के लिए शोधपत्र, आलेख, पत्रिकाएँ, समाचारपत्र, इंटरनेट, प्रश्नावली के द्वारा शोधसामग्री संकलित करने का मानस है। अनुसंधान की आवश्यकता के अनुकूल शोधकार्य की अन्य पध्दतियो का उपयोग किया जायेगा।

शोधकार्य की उपादेयता

इक्कीसवी सदी में आधुनिकता बोध कई आयामों के साथ चित्रित हुआ है। एक ओर इसके गलत रास्ते अपनाए जा रहे हैं तो दूसरी ओर अच्छे परिवर्तन की आशाएँ की जा रही है। इस सदी के उपन्यासकारोंने बडी जिम्मेदारी और हिम्मत के साथ इक्कीसवी सदी के आधुनिकता बोध की अच्छी स्थितियों का चित्रण किया है जैसे अंधश्रध्दा निर्मूलन, स्त्री-पुरूष समानता, जातिगत समानता आदि। समाज में गलत धारणाएँ और

व्यवहार में गलत बातें हमेशा ही रहेगी, समाज की यह जिम्मेदारी है कि, वह सही और गलत की पहचान करें और स्वीकार करें इस दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों का अध्ययन किया है। समाज को एक नई दिशा देने के लिए और हिंदी उपन्यास साहित्य की ओर एक नई दृष्टि से देखने परखने समझने के लिए प्रस्तुत शोधकार्य की उपादेयता रहेगी।

प्रस्तुत शोधकार्य का अध्याय विभाजन इस तरह से है।

'इक्कीसवी सदी के उपन्यासों में बदलते मूल्यों का प्रतिबिंब।'

अध्याय १	विषय प्रवेश
अध्याय २	मूल्यः परिभाषा, स्वरूप एवं प्रकार
अध्याय ३	बदलते मानवीय मूल्य और हिंदी उपन्यासों की परंपरा।
अध्याय ४	इक्कीसवी सदी के उपन्यासों में बदलते मूल्यों का प्रतिबिंब
अध्याय ५	बदलते मूल्य समस्या एवं समाधान
	उपसंहार एवं निष्कर्ष

भविष्य में शोध अध्ययन की संभावनाएँ -

प्रस्तुत शोधकार्य में इक्कीसवी सदी के उपन्यासों में प्रतिबिंबित बदलते मूल्यों को स्पष्ट करने के लिए किया गया है। वैसे तो इक्कीसवी सदी के साहित्य पर स्त्रीविमर्श, दलित विमर्श, युवा विमर्श की दृष्टि से अनुसंधान हुआ है। इस शोधकार्य के द्वारा इन बिंदूओं को छूते हुए मूल्यों का जो क्षरण हो रहा है उसे रेखांकित किया जाएगा।

आधुनिकवादी विचारधारा से प्रभावित समाज शहरीकरण के तेज प्रक्रिया में घसीटता जा रहा है। जिसे पारंपारिक मूल्य बिखेरते जा रहे है। इस दृष्टि से भविष्य में अकेलापन, घुटन, महसूस करनेवाले पात्रों के मानसिक उलझन पर भी कार्य किया जा सकता है। इक्कीसवी सदी उपन्यासों के शिल्प-शैली में आए बदलाव, इक्कीसवी सदी में महानगरीय जीवन, इक्कीसवी सदी में वृद्धविमर्थ पर भी शोधकार्य किया जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन हिंदी उपन्यासों में व्यक्त मानवीय मूल्यों के संदर्भ में किया जा रहा है।

उपन्यासों के अलावा कहानी, नाटक, कविता आदि विधाओ में भी बदलते मानवीय मूल्यों को लेकर अध्ययन किया जा सकता है।

भविष्य में इस दृष्टि से नैतिक अनैतिक प्रवृत्तियों का प्रभाव उपन्यासों में कैसे हुआ है, पाश्चात्य जीवनशैली का प्रभाव या क्षणवादी प्रवृत्ति से मानवीयता का स्तर कैसे गिरता जा रहा है आदि विषयों पर शोधकार्य हो सकता है। इस दृष्टि से प्रस्तुत शोधकार्य का सहयोग रहेगा।

अध्याय १ - विषय प्रवेश

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। मनुष्य की जिजीविषा इस परिवर्तन के साथ, बदलते परिवेश के साथ बदलती रहती है। जीवन के यथार्थ के साथ मनुष्य जीवन को साहित्यकार विश्लेषित करता है। मूल्य अवधारणा का प्रश्न आज के बदले हुए परिवेश के साथ हिंदी उपन्यासों में बराबर चित्रित हो रहा है। मूल्यवादी दृष्टि रखकर हिंदी उपन्यासकार परिवेशगत जीवन मूल्यों को बदलते संदर्भों के साथ व्यक्त कर रहें हैं। भारतीय जीवनमूल्य और पश्चिम प्रभाव से आए बदलाव के कारण होनेवाली संघर्षमय स्थिति का प्रतिबिंब इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में बराबर अंकित हो रहा है। टूटते जीवनमूल्यों का चित्रण इस सदी के उपन्यासकारोंने यथार्थता के साथ बडे साहस से किया है उसीकी खोज का प्रयास इस शोधकार्य में किया जाएगा।

इस दृष्टि से संक्षेप में उपन्यास विधा की परंपरा एवं जीवनमूल्यों का चित्रण हिंदी उपन्यासों में किस तरह हुा है इसे देखते हुए इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में इसका प्रतिबिंब कैसे अंकित हुआ है इसका प्रयास यहाँ किया जाएगा।

समय की निरंतरता में भूमंडलीकरण, उदारीकरण और नीजिकरण के साथ इक्कीसवी सदी नई चुनौतियों के साथ आ गयी हैं। इन सभी चुनौतियों से प्राचीन और नवीन मूल्यों में एक संघर्ष की स्थिति पनपने लगी है। हिंदी साहित्य में इन सारी स्थितियों को बराबर चित्रित किया जा रहा है। हिंदी उपन्यास साहित्य में शैली, शिल्प तथा विषय इस दृष्टि से काफी परिवर्तन हो रहे हैं। शैली की दृष्टि से आत्मकथनात्मक

ढंग से लिखा कमल कुमार का 'पासवर्ड' उपन्यास पूरी तरह से आधुनिकता से उत्तराधुनिक स्तर पर पहुँचा है। मनीषा कुलश्रेष्ठ का 'शिगाफ' उपन्यास ब्लाग, ई-मेल शैलीद्वारा लिखा है। जिसमें विस्थापन की समस्या चित्रित है। नारी की स्थिति में परिवर्तन एवं विद्रोह की भावना को प्रस्तुत करनेवाले उपन्यास कुसुम अंसल का 'तापसी' तथा उषा प्रियवंदा का 'अंतर्वंशी'। इसतरह के अनेक उपन्यासों में इक्कीसवी सदी की बदलती तस्वीर चित्रित हुई है।

अध्याय २ - मूल्यः परिभाषा, स्वरूप एवं प्रकार

जीवन मूल्यों के सार्थक और सजीव अंकन से ही रचना काल जयी एवं दीर्घजीवी हो पाती है। इस दृष्टि से अध्ययन इस अध्याय में किया जाएगा। भारतीय जीवनशैली का मूलाधार ही मूल्य है। पौराणिक दर्शनमूल्यों के माध्यमसे जीवनतत्त्वों का समग्र विवेचन वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, जैन एवं बौध्द साहित्य में हुआ है। जीवन मूल्य एक समस्त पद है Values of life और इसकी व्याप्ति हमारे जीवन में आदि से अंत तक है। मनुष्य जीवन के विशेष अनुभव और घटना उनमें सम्मिलित रहते है। हर एक के जीवन में अनेक स्तर होते है, जीवन के सुख दुख के क्षणों से यह स्तर व्यक्ति के आयु को एक स्तरियता देते रहते है इसीकी माध्यम से व्यक्ति का अपना जीवनमान बनता रहता है। मानसिक, आर्थिक, सामाजिक आदि स्तरों पर जीवन जीते हुए व्यक्ति अपने परिवेशगत स्थितियों के अवगुंठन में अपने जीवन को आकार देता है।

'वसुधैव, कुटुम्बकम जनहिताय' का संकल्प अथवा 'विश्व-शांति' की धारणा से ही भारतीय मूल्यों की पहचान पूरे संसार को होती है। भारतीय चिंतन में हिंसा और अहिंसा, धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, नैतिक-अनैतिक आदि मूल्यों की धारणा परंपरा से चली आ रही है। समय और आवश्यकता के अनुसार मूल्य परिवर्तित होते हैं। मूल्य बदलने से जीवनपध्दति बदलती है। इक्कीसवी सदी तक आते आते आधुनिक जीवनशैली में मूल्यों की बहुलता हो गयी है। इस दृष्टि से मूल्य की परिभाषा, उसके स्वरूप और प्रकार भी

नए रूपों में व्यक्त हो रहे हैं। इक्कीसवी सदी के संदर्भ में मूल्यों के विविध रूप सामने आ रहें है। उपन्यासों में इसे किसतरह अंकित किया है इसे इस अध्याय में देखा जाएगा।

जीवन के मार्गदर्शक सिध्दांत के रूप में मूल्य मानवी जीवन के सर्वंकष विकास में प्रेरक रहते हैं। इस दृष्टि से जीवन में घटित अनेक प्रसंगो के अनुसार मूल्यों का भी विविध रूपों में परिवर्तन होता है। मूल्यों का वर्गीकरण विभिन्न प्रकार से किया जाता है। मूल्यों के संदर्भ में इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में किसतरह इन प्रकारों के अंतर्गत अभिव्यक्ति हुई है इसका भी अध्ययन इस अध्याय के द्वारा किया जाएगा।

अध्याय ३ - बदलते मानवीय मूल्य और हिंदी उपन्यासों की परंपरा।

हिंदी साहित्य में गद्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा के रूप में उपन्यास आधुनिक युग की लोकप्रियता पर कायम रहें हैं। प्रेमचंद उपन्यास को मानवजीवन का चित्र मानते हैं। प्रेमचंद हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में एक ऐसे उच्च शिखर हैं, जहाँ से खडे होकर पाठकीय संवेदना और उनके रुपकार के संबंध में सुविधापूर्वक विचार किया जा सकता है। इस दृष्टि से हिंदी उपन्यास साहित्य को तीन कालों में बाँटा जा सकता है -

१) प्रेमचंद पूर्व उपन्यास (१८७० से १९१६ तक)

२) प्रेमचंदकालीन उपन्यास (१९१६ से १९३६ तक)

३) प्रेमचंदोत्तर उपन्यास (१९३६ से अब तक)

हिंदी साहित्य में भारतेंदु युग से ही उपन्यास विधा का सूत्रपात माना जाता है। उस समय अंग्रेजी, बंगला आदि भाषाओं के अनूदित उपन्यासों का विकास हुआ। इसतरह के उपन्यास मात्र मनोरंजन के लिए लिखे तिलस्मी या ऐय्यारी घटनाओं का सिलसिला मात्र थे। प्रेमचंद के आगमन से हिंदी उपन्यास का वास्तविक एवं क्रमबद्ध विकास हुआ। चरित्र-प्रधान उपन्यास प्रेमचंदने नए ढंग से लिखें। ‘‘प्रेमचंदजी ने सभी प्रकार के मानवीय समस्याओं के यथार्थ चित्रण के अतिरिक्त उनकी पारस्परिक एकता और अनेक कष्टों के उलझन द्वारा उनका समाधान भी प्रस्तुत किया है।’’[१]

मानवीय एवं सामाजिक यथार्थ को प्रेमचंदजी ने अपने उपन्यासोंद्वारा विशेष लोकप्रिय बनाया। देश के नवजागरण से नवयुग की समस्याओं और भाव-विचार से प्रेमचंद और उनके समकालीन अन्य लेखकों ने परिचित करा दिया। उपन्यास साहित्य की दृष्टि से प्रेमचंद काल का बडा योगदान रहा है। प्रेमचंद के 'गोदान' मे अनेक गतिशील चरित्र अंकित हुए हैं। जो गाँव और शहर की स्थिति को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करते हैं। यहाँ नीच से नीच पात्र में भी मानवता विद्यमान हैं। सभी पात्र स्वाभाविक एवं व्यक्तित्वपूर्ण हैं।"[२] प्रेमचंदोत्तर काल में हिंदी साहित्य मार्क्सवादी चेतना से प्रेरित रहा व्यक्ति और समाज को नए युगीन परिप्रेक्ष्य में देखा जाने लगा। प्रेमचंदोत्तर उपन्यासकार अपनी विशिष्ट विचारधारा और सर्जनात्मक शक्ति से स्वतंत्र शैली में लिखने लगे। उपन्यास परंपरा में भिन्न भिन्न प्रवृत्तियाँ जैसे सामाजिक उपन्यास, मनोवैज्ञानिक, समाजवादी आँचलिक, व्यक्तिवादी तथा ऐतिहासिक उपन्यास लिखे जाने लगे। साम्यवादी उपन्यासधारों में डॉ. रांगेय राघव उल्लेखनीय है।"मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में पात्र अंतर्मुख होते हैं। और जो पुरातन नैतिक और सामाजिक मूल्यों की अवहेलना करने नए मूल्यों के अभाव में व्यक्ति - स्वातंत्र्य की घोषणा करते हैं।"[३] जैनेंद्रजी ने हिंदी मनोवैज्ञानिक उपन्यास क्षेत्र में ख्याति प्राप्त की है। अमृतलाल नागरजी ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व से लेकर समाज के सभी परिवर्तनों, जीवनमूल्यों को बारीकी से परखा है।

"प्रेमचंदजी ने समकालीन मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति, मूल्यसंकट, नैतिक दुर्बलता, वैचारिक ढुलमुलपन आदि का अपेक्षाकृत विस्तारपूर्वक और विश्वसनीय अंकन किया है।"[४] देश के नवजागरण से नवयुग की समस्याओं और भाव-विचार से प्रेमचंद और उनके समकालीन अन्य लेखकोंने परिचित करा दिया। उपन्यास साहित्य की दृष्टि से प्रेमचंदकाल का बडा योगदान रहा है।

इक्कीसवी सदी के उपन्यासकारों ने नवीन परिस्थितियों की जटिलता, मानसिक का नया रूप प्रस्तुत किया है। उपन्यास के विस्तृत फलक पर लेखक बडी कुशलता से नई परिस्थिति और नई समस्याओं को अंकित कर सकता है। निरंतर बदलनेवाली

परिस्थिति, उससे उत्पन्न समस्याओं का चित्रण हिंदी उपन्यासकारों की सर्जनात्मकता को नई भावभूमि पैदा कर देती है।

इस सदी तक आते आते नए जीवन दर्शन निर्माण हुए। पैसा और उपभोग की स्थिति से मूल्यों का विघटन, उच्चतम जीवन की लालसा, स्वार्थी वृत्ति और आर्थिक, सांस्कृतिक, पूँजीवादी प्रवृत्तिसे अनेक चुनौतियाँ सामने आयी। पूँजी और बाजार के संजाल में चौंधियाँ देनेवाली चकाचौंध ने मनुष्य को मानवीय संवेदनाओं से बदखल कर दिया है।

अध्याय ४ - २१ वी सदी के उपन्यासों में बदलते मूल्यों का प्रतिबिंब

मानवी जीवन में मूल्यों का महत्व अनन्यसाधारण है मूल्यों के आधार पर ही मनुष्य सही-गलत का चुनाव करता है। समाज की आवश्यकता के अनुसार परंपरा से ये मूल्य बनते गए है जो नैतिकता के धरातल पर, आर्थिक एवं सामाजिक सरोकारों के आधार पर तय किया जाते थे। इन नीतिमूल्यों को धार्मिकता का संबल था। परंतु समय परिवर्तन के साथ साथ वैश्वीकरण के दौर तक आते आते मूल्य घटते जा रहे हैं। सांप्रदायिकता, जातिवाद, हिंसा, असहिष्णुता के कारण मूल्यों के विघटन ही नजर आ रहें है। इस बदलते माहौल का पूरा चित्रण अनेक साहित्यकारों ने किया है। प्रस्तुत अध्याय में बदलते मानवीय मूल्यों की दृष्टि से उपन्यासों का अध्ययन किया जायेगा।

इक्कीसवी सदी के उपन्यासकारोंने भूमंडलीकरण से निर्माण इन परिस्थितियों से जूझते मानव को अपने उपन्यासोंद्वारा अभिव्यक्त किया है। उदाहरण के तौर पर हम देख सकते है कि शिक्षा के क्षेत्र में रॅगिंग की समस्या, व्यसनाधीनता, बेरोजगारी, युवा संगठन आदि समस्याओं को मनोज सिंह के उपन्यास 'हॉस्टल के पन्नों से', ममता कालिया का 'अंधेरे का ताला', जैसे उपन्यासों में बडी सशक्तता के साध चित्रित किया गया है।

कुल मिलाकर इक्कीसवीं सदी तक आते आते भारतीय जीवन मूल्यों की टकराहट से निर्माण विघटन प्रवृत्ति का चित्रण उपन्यासकारोंने किया है। जीवन मूल्यो मे आयी गिरावट से जीवन की जटिलता बढती जा रही है।

इक्कीसवी सदी तक आते आते। मूल्य, नैतिकता, परंपरा, सांस्कृतिक संदर्भ, काँच के बर्तन की भॉति टूट रहे हैं। समाज जो रूप धारण कर रहा है उससे भिन्न भिन्न वर्गो में जो प्रवृत्तियाँ उभर रही है। उसका विस्तृत प्रत्यक्षीकरण ही नहीं, बल्कि आवश्यकतानुसार उसके निराकरण की प्रवृत्ति भी उपन्यासकार प्रस्तुत कर रहें हैं। इक्कीसवी वी सदी के उपन्यासों में पूँजी और बाजार के संजाल से चकाचौंध ने मनुष्य को मानवीय संवेदनाओं से बदखल कर दिया है। प्रस्तुत उपन्यासों में इन बदलावों का चित्रण हुआ है।

समय के बदलाव का प्रभाव साहित्य और समाज पर भी पडता है। रचनाकार इस परिवर्तन को महसूस करता है इसमें जीता है, इसलिए रचनाकार अपने समय का सबसे बडा पारखी होता है। इक्कीसवी सदी में राजनीति, अर्थनीति और सामाजिकता में एक अलगाव स्थापित हुआ। इन तीनों परिस्थितियों की गति एवं दिशा अलग रही, जिसमें फँसा आदमी नीचले स्तर पर गिरता जा रहा है। तेजी से परिवर्तित पारिवारिक एवं सामाजिक रिश्ते फिर एक बार दाँव पर लगे।

वैश्वीकरण और बाजारवादी संस्कृति में हम अपनी संस्कृति भूलते जा रहे हैं। इन उपन्यासों में बडी संवेदना के साथ चित्रण हुआ है। हिंसाचार, आतंक, अकेलेपन की समस्या, वृध्दों की समस्या आदि का चित्रण इक्कीसवी सदी के उपन्यासों में हुआ है। जिस आतंक से हम त्रस्त है वह सिर्फ जिस्मानी नहीं बल्कि मानसिक स्तर पर भी है। जिस 'धर्म' शब्द से ही हमें शांति प्राप्त होती थी, आज वैश्वीकरण के दौर में वही द्वेष एवं शस्त्र का रुप धारण कर रही है। ऐसे समय साहित्यादि कलाएँ, जो हमारे जीवन, संस्कृति जीवन विषयक तत्त्वों से, मूल्यों से जुडी रहती है, वही हमारी मानवीयता की धरोहर है। साहित्य याने संस्कृति, मानवता का परिचायक जो इस सौहार्द भावनाओं, संवेदनाओं को सँजोकर रख पाएगा। इस दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों का अध्ययन किया

जाएगा। १९९० के दशक के बाद वैश्वीकरण के समय से भारतीय परिवेश में पूरी तरह बदलाव दिखाई देता है। आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थिति में बदलाव दिखाई देता है। विवेच्च उपन्यासों में अपने युगबोध का चित्रण संवेदनशील साहित्यकारों ने कैसे किया है इसका मूल्यांकन इस अध्याय में किया है।

इस दृष्टि से इक्कीसवी वी सदी के ‘चलती चाकी’ सूर्यनाथ सिंह द्वारा लिखित उपन्यास में ग्रामसुधार के माध्यमसे दौलतपुर गाँव के बदलते परिवेश का अंकन कैसे किया है तथा मृणाल पांडे द्वारा लिखित ‘सहेला रे’ उपन्यास में भारतीय संगीत के माध्यम से मध्यकालीन समय के कलाकारों का संगीत प्रेम कैसा रहा इसे व्यक्त किया है। पौराणिक संदर्भ लेकर आधुनिक विचारों को प्रस्तुत करनेवाला उपन्यास ‘पंचकन्या’ मनीषा कुलश्रेष्ठ द्वारा लिखा है। इन उपन्यासों में अभिव्यक्त इक्कीसवी सदी के मूल्य किसतरह मानवीय भावबोध से टकरा रहें है तथा इस तरह के कुछ अन्य उपन्यास भी यहाँ चित्रित कियें जायेंगे। साहित्य जीवन का साक्ष्य है। इक्कीसवी सदी के उपन्यासकारों ने बडी सूक्ष्मता से गतिमान जीवन की विसंगति, विडंबनाओं को यथार्थ की भावभूमि पर उतारा है। नारी विमर्श, दलित विमर्श, उपभोक्ता प्रवृत्ति, आतंक हिंसा आदि विषयों का चित्रण नए तेवर के साथ उपन्यासकारों ने किया है।

अध्याय ५ - बदलते मूल्य समस्या एवं समाधान

आधुनिक साहित्य में मूल्य शब्द का प्रयोग वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक स्तर पर किया जा रहा है। मानव व्यवहार के मानदंड इसके आधार पर नापे जा रहें हैं। मूल्यों का प्रारंभ समाजद्वारा अपनी आवश्यकतानुसार होता है। मानव मूल्य तथा साहित्यिक मूल्य एक दुसरे से जुडे है। क्यों कि साहित्य समाज का दर्पण कहा गया है। साहित्य में मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा का प्रयास किया जाता है। समाज के विकास के साथ पुराने विचारों को कालबाह्य किया जाता है और नए विचारों के साथ नए मूल्य गढे जाते हैं। प्राचीन और नवीन मूल्यों की टकराहट से उत्पन्न परिस्थिति में आम आदमी तथा मनुष्य की जीजिविषा संघर्षमय बन जाती है।

विवेच्य उपन्यासों में बदलते मूल्यों का चित्रण कैसे हुआ है इसका अध्ययन किया जाएगा। उदाहरण के तौर पर हम देख सकते है कि हमारी भारतीय परंपरा में एकल परिवार की संकल्पना थी परंतु आधुनिकता की इस स्थिति में वृध्दों को घर से बेदखल किया जा रहा है। काशीनाथ सिंह का उपन्यास 'रेहन पर रग्घू' में वृध्दावस्था का चित्रण इसी रुप में किया गया है। प्रस्तुत उपन्यासों में अपनी नई पीढी को अमेरिका में बसते देख रग्घू मास्टर को कचोट है कि, ''कभी सोचा था कि एक छोटे से गाँव से लेकर अमेरिका तक फैल जाओगे?''[५] भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण से किया गया मूल्यों का फर्क यहाँ नजर आता है। 'शाम की झिलमिल' में वृद्ध जीवन की उपेक्षा बदलते परिवेश में किसतरह हुई है इसका विश्लेषण किया जाएगा।

पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव भारतीयों के जनजीवन पर किस कदर हावी हो चुका है इसे स्पष्ट करने की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यासकारों ने जिन पात्रों के द्वारा इसमें अभिव्यक्त किया है उन पात्रों का संक्षेप में परिचय भी इसमें होगा। इक्कीसवी सदी की परिवर्तनशीलता के साथ जीवन मूल्यों में हो रहें संक्रमण से अभाव, निर्धनता में जीता आदमी स्वाभाविक रुप से कृपण और स्वार्थी हो रहा है। मानवीय संवेदनाएँ लुप्त हो रही है। स्वार्थी एवं क्रूर बनकर वह जी रहा है। ऐसे ही विवेच्य उपन्यासों के पात्र व्यवस्था की विकृति में लक्ष्मणरेखा लाँघ रहें है भारतीय परिवेश में हुए बदलाव से मूल्यों में आए परिवर्तन से नैतिक ऱ्हास तथा अन्य समस्योओं का चित्रण इस अध्याय में किया जाएगा।

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय आम आदमी ने रामराज्य का सपना देखा था लेकिन वह पूरा नहीं हुआ। इक्कीसवी सदी तक पहुँचने के पश्चात भी सुजलाम सुफलाम् भारत का सपना बिखेरते दिखाई दे रहा हैं। आम आदमी गरीब, महंगाई आदि के तहत दिन-रात खटते रहे है। उसने मन में शांतिपूर्ण एवं सुखद जीवन के जो सपने संजोए थे वे चूर-चूर हो गए। नेताओं के व्यक्तव्य, खोखले वायदे निरर्थक बन गए हैं। इस मोह भंग के कारण जो भारतीय मूल्य महत्वपूर्ण लगते थे उसमें कहीं कही दरारे पडने लगी हैं। धर्म का रूढिवादी रूप आज बदल चुका है। अंधश्रध्दा से दूर रहकर अलौकिक सत्ता के प्रति भी संदेह निर्माण हो रहा है। धर्म के नाम पर जो आडंबर, अबलाओं का शोषण हो

रहा है। इस अध्याय में विवेच्य उपन्यासों के पात्रों की सोच में आए परिवर्तन को तथा उसका विवेक न्याय - अन्याय का विश्लेषण कर रहा है तथा अपने युगीन परिवेश की विषम परिस्थिति में ये पात्र किस तरह इस युग की पहचान करा रहे है इसको प्रस्तुत किया जाएगा।

विवेच्य उपन्यासों में चित्रित समस्याओं का समाधान तथा भ्रष्ट व्यवस्था, पूँजीवादी व्यवस्था में आम आदमी का संघर्ष भारतीय जीवनमूल्यों का क्षरण तथा नई संवेदना के साथ चारों ओर की विसंगति, तनाव के साथ जूझनेवाले शोषित एवं आम, मध्यवर्ग का चित्रण यथार्थ की भावभूमि पर हुआ है इसका विवेचन किया जाएगा। चयनीत उपन्यासों में जिस तरह मूल्यों में बदलाव हुआ है। नये नये मूल्य आये है। अच्छे मानवीय मूल्यों के विघटन की जो समस्याएँ निर्माण हुई। उन्ही का समाधान हमें चयनित उपन्यासों मे कई घटनाओ एवं पात्रे द्वारा लेखकने कैसे किया हैं। इसका अध्ययन किया जायेगा।

उपसंहार एवं निष्कर्ष

इक्कीसवी सदी तक आते हुए भी उपन्यास मुख्य विधा के रूप में ही स्थिर है। इसका कारण इस समय की जटिल यथार्थता को उपन्यास के विस्तृत फलक पर ही स्पष्ट रुप से अभिव्यक्त किया जा सकता है। मानव जीवन का बहुआयामी चित्रण युगीन समस्याओं, अनुभूतियों तथा संवेदनाओं का व्यापक रूप इन उपन्यासों में किया गया है। नैतिक मूल्यों के बदलते मापदंडो ने उपन्यास को सबसे अधिक प्रभावित किया है। मूल्य केवल मानव व्यवहार को दिशा प्रदान नहीं करते बल्कि वे अपने आप में एक आदर्श भी प्रस्थापित करते हैं। तकनीकी एवं अन्य संचार माध्यम के प्रसारण से हमारे सोचने-समझने के तरीके में जबरदस्त बदलाव आया है। जिससे नैतिक मूल्यों में कमजोरी आ गई है। भारत जैसे विकासशील देश में सकारात्मक नैतिक मूल्यों की आवश्यकता महत्वपूर्ण है परंतु बदलते परिवेश में पुराने मूल्य नकारे जा रहें है और आस्थाहीन समाज

नए मूल्यों को भी सहजता से नहीं अपना रहा है इस टकराहट की स्थिति का लेखा जोखा प्रस्तुत उपन्यासोंद्वारा हुआ है। कुछ लेखकों ने इन मूल्यों की सँजोने का प्रयास किया है या नहीं, नैतिक चरित्रों का निर्माण करने की मार्मिकता लेखकों ने दिखाई है या नहीं आदि का अध्ययन इसमें होगा।

इक्कीसवी सदी में भूमंडलीकरण, बाजारवाद की चकाचौंध में बदलती मनोवृत्ति का चित्रण उपन्यासों में हुआ है, उपसंहार और निष्कर्ष के रुप में विवेच्य उपन्यासों में चित्रित समस्याओव्दारा उसका समाधान लेखक ने कैसे किया है इसे प्रस्तुत किया है।

विवेच्य उपन्यासोंद्वारा व्यक्त भाव मन पर कैसा असर करते हैं। लेखकों की भाषाशैली, व्यंग्य, विडंबन, तीखे कटू शब्दों में स्पष्टोक्ति आदि का विवेचन किया जाएगा। प्रस्तुत अध्याय में समग्र शोध अध्ययन करने के पश्चात जो निष्कर्ष निकलेंगे उसका विश्लेषण दिया जायेगा।

संदर्भ -

१. हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यास और उपन्यासकार — द्वारिका प्रसाद सक्सेना — पृ. २२.
२. हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यास और उपन्यासकार — द्वारिका प्रसाद सक्सेना — पृ. १०५
३. हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यास और उपन्यासकार — द्वारिका प्रसाद सक्सेना — पृ. १८७.
४. हिंदी उपन्यास का इतिहास — गोपाल राय — पृ. १३०
५. समकालीन भारतीय साहित्य — मार्च एप्रिल-२०१६

समकालीन भारतीय साहित्य — जुलै अगस्त-२०११
अनुसंधान प्रविधि और प्रक्रिया — डॉ. मधु खराटे, डॉ. शिवाजी देवरे
mookaawaz.blogpost.in/2014